अक्रम यूथ

मार्च २०१७ | हिन्दी दादा भगवान परिवार ₹१२

नीरू माँ का आप्तसिंचन

Dada's Youth Network

अनुक्रमणिका

०४ दादा श्री के पुस्तक की झलक

०६ ब्रह्मचर्य पालन करके निकाल लो काम

०९ ज्ञानी ही आत्मा का दर्पण

१० नीरू माँ जगत् कल्याण के नाविक

१२ प्रेम से रहना... प्रॉमिस?

१४ संकुल की माँ - "नीरू माँ"

१६ नीरू माँ की व्यवहार सूझ

१८ चलेगा, भाएगा और रास आएगा

२० ज्ञानी विद यूथ

आॅनलाइन सबस्क्राइब करने के लिए...
store.dadabhagwan.org/akram-youth

Visit http://youth.dadabhagwan.org/Gallery/Akram-Youth

You need to download QR Code Scanner App from Play store or iTunes Store

Download free ebook / PDF versions of all Akram Youth issues by scanning this QR code

संपादक : डिम्पल मेहता
वर्ष : ४, अंक : ११
अखंड क्रमांक : ४७
मार्च २०१७

संपर्क सूत्र :
ज्ञानी की छाया में,
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद-कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला : गांधीनगर-३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००
email: akramyouth@dadabhagwan.org
website: youth.dadabhagwan.org

Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj -
382421. Dist- Gandhinagar

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj -
382421. Dist- Gandhinagar

Printed at
Amba Offset
B-99, K6 Road, Electronics GIDC,
Sector 25, Gandhinagar - 382044,
Gujarat, India

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj -
382421. Dist- Gandhinagar

कुल २४ पेज कवर पेज सहित
सदस्यता शुल्क
वार्षिक
भारत : १२५ रुपए
यू.एस.ए. : १५ डॉलर
यू.के. : १० पाउन्ड
पाँच वर्ष
भारत : ५०० रुपए
यू.एस.ए. : ६० डॉलर
यू.के. : ४० पाउन्ड
D.D/M.O. महाविदेह फाउन्डेशन के नाम पर भेजें।

संपादकीय

"नीरू माँ" यह शब्द सुनते ही सभी को अपनी रियल माँ याद आ जाती हैं। उनके साथ गुज़ारा हुआ एक-एक पल अनेक महात्माओं के लिए जीवनभर की पूँजी है। उनसे मिलते ही दादा के लिए "अहो, अहो" हो जाता है कि कैसे उन्होंने नीरू माँ का रुपांतरण किया कि उनको देखते ही, जैसे कि अपनी रियल मदर मिल गई हो, वैसी शांति मिलती है। फिर चाहे कैसी भी मुसीबत आए तो, "नीरू माँ हैं न..." ऐसी हूँफ रहती है। ये तो कुछ ही शब्द हैं, लेकिन नीरू माँ से मिलने का, उनके साथ कुछ समय बीताने के अनुभव का शब्दों में वर्णन नहीं किया जा सकता।

नीरू माँ से एक बार मिलकर अगर लोगों को ऐसी अनुभूति होती है, तो सोचो, "जो युवा भाई-बहन उनके आश्रय में, उनकी छाँव में आप्तसंकुल के सदस्य बनकर ब्रह्मचारी भाइओं और ब्रह्मचारी बहनों की तरह रहते हैं, उन पर नीरू माँ का कैसा वात्सल्य छलकता होगा! ममता के कैसे विशेष झरने में वे नहाते होंगे!"

यह सोचते ही नीरू माँ का सिंचन, उनका प्रेम, उनके हृदय की भावना कि आप्तपुत्रियाँ और आप्तपुत्र कैसे होने चाहिए, ऐसे अनेक भावुक प्रश्न हमारे मन में उठते हैं। चलो, इस अंक में हम यह समझेंगे कि नीरू माँ किस प्रकार हर एक बालक का सिंचन करती थीं।

नीरू माँ के देहविलय के बाद ऐसी व्यवस्था की गई है कि ब्रह्मचर्य का पालन करके दादा के जगत् कल्याण के मिशन में जो युवा समर्पित होना चाहते हैं, उन्हें "आप्तसिंचन" नामक पाँच साल की ट्रेनिंग लेनी होती है। नीरू माँ अपने आप्तपुत्रों और आप्तपुत्रियों का ऐसा ही आप्तसिंचन स्वाभाविक तरह से करती थीं। तो चलो देखें... "नीरू माँ का आप्तसिंचन" कैसा था, किस प्रकार उन्होंने अपने संकुल का गढ़न करती थीं।

-डिम्पल मेहता

दादा श्री के पुस्तक की झलक

इस प्रकार दादा श्री ने किया नीरू माँ का आप्तसिंचन

Visit
https://goo.gl/nlnXPE

Download free ebook version of above Book by scanning this QR code

नीरू माँ जगत् कल्याण की बहुत बड़ी निमित्त हैं। उन्हें हम अपने से अलग नहीं करेंगे। अन्य सभी को छोड़ देंगे लेकिन उन्हें नहीं छोड़ेंगे। (१९७५)

जिनमें जगत् कल्याण का निमित्त बनने की संभावना दिखाई देती है, उनके लिए हम ज्यादा कोशिश करते हैं। इस नीरू के लिए हम इसलिए इतने प्रयास करते हैं कि जब हमारी अनुपस्थिति हो तब भी वह किसी का ध्रुव काँटा बदल सके ऐसी शक्ति है उनमें! (०९-१०-७२)

ज्ञानी के आश्रय में स्ट्रोंग ब्रह्मचर्य का पालन किया!

चरित्र यानी चरित्र का किस तरह से सुंदर पालन किया! उनका यह बहुत सुंदर चरित्र, मेरी उपस्थिति में अच्छी तरह पालन किया, वह भी आश्चर्य ही है न! चरित्र का पालन करना कोई आसान काम नहीं है। मेरी उपस्थिति में मैंने नीरू बहन का चरित्र देखा, बहुत सुंदर पालन किया है!

इन चार सालों से जब से वे मेरी सेवा में हैं, तब से मैंने देखा है कि उनका बहुत उच्च चरित्र है और चार साल में उन्हें जो ब्रह्मचर्य व्रत दिया, उसे भी एक्ज़ेक्ट कर दिखाया। विचार से भी भूल नहीं की, है न? एक विचार तक नहीं।

नीरू बहन : नहीं।

दादाश्री : यदि हो गया हो तो उसका प्रतिक्रमण कर लेते हैं?

नीरू बहन : हाँ!

दादाश्री : ऐसा ही होना चाहिए। मेरी उपस्थिति में जो व्रत लेता है न। उन्हें तो चरित्र

की बहुत ज़रूरत है।

प्रश्नकर्ता : *नीरू बहन के अलावा अन्य किसी के भी लिए दादा ऐसी गारन्टी नहीं दे सकते!*

आपको पूरे जगत् की मदर बनना है!

दादाश्री : *दादा आपको क्या कहते हैं? मदर जैसा कहते हैं, झवेर बा जैसा कहते हैं, है न? आपको क्या कहते हैं?*

नीरू बहन : *झवेर बा जैसा आपका प्रेम है।*

दादाश्री : *झवेर बा जैसे हैं!*

नीरू बहन, आपने मदर की तरह हमारी नर्सरी की है, बेटी की तरह चाकरी की है और नर्स की तरह सेवा की है। (१९८७)

नीरू बहन, आपको पूरे जगत् की मदर बनना है। (१९८७)

> **“उनका बहुत उच्च चरित्र है और चार साल में उन्हें जो ब्रह्मचर्य व्रत दिया, उसे भी एक्ज़ेक्ट कर दिखाया। विचार से भी भूल नहीं की।**

ब्रह्मचर्य पालन करके निकाल लो काम

अक्तूबर २००४ में एक रात १० बजे हमें फोन आया... "नीरू माँ बुला रही हैं"। नीरू माँ ने बुलाया है!... सारे काम छोड़कर सब भाई उत्साह से "वात्सल्य" पहुँच गए। पोडियम में नीरू माँ के आस-पास सब बैठ गए। उस दिन नीरू माँ के मुख से निकली हुई वाणी आज तक हमारे कानों में गूँज रही है। लाल आँखों से नीरू माँ ने हम सब से कहा... "ब्रह्मचर्य का पालन लोहे के चने चबाने जैसा है। यह कोई खेल नहीं है। यहाँ पोल नहीं चलेगी। किसी की भी पोल नहीं चलेगी। अब्रह्मचर्य से संबंधित एक भी भूल नहीं चलाएँगे। इसमें सिन्सियर रहना ही पड़ेगा। किसी से भी भूल होगी तो मैं उसे घर वापस भेज दूँगी। ब्रह्मचर्य में तो

स्ट्रोंग रहना ही पड़ेगा। यह कोई अंधेर नगरी नहीं है कि जैसा चाहे वैसा चले! नीरू माँ के बेटे कैसे होने चाहिए? उनका ब्रह्मचर्य अखंड होना चाहिए। जो ब्रह्मचर्य का पालन करेगा, वह राजाओं का भी राजा।" उस दिन नीरू माँ का हृदय समझ में आया। नीरू माँ हम सभी को ब्रह्मचर्य की पुष्टि देती थीं। उस दिन हम सभी में नीरू माँ ने ब्रह्मचर्य का बहुत पावर भर दिया था।

एक बार एक भाई ने नीरू माँ से पूछा था कि, "हमारा ब्रह्मचर्य कैसा होना चाहिए, आपकी भावना क्या है?" नीरू माँ ने कहा, "दादा जैसा"। तो हमने पूछा... दादा का ब्रह्मचर्य कैसा था? नीरू माँ ने कहा, "दादा का ब्रह्मचर्य समझना चाहते हो? पता है, उनकी भाभी दादा के लिए क्या कहती थीं? अपने पूरे जीवन में दादा जी ने कभी भी भाभी की ओर आँख उठाकर देखा नहीं था। हमेशा नज़र झुकाकर ही भाभी से बात करते थे। ऐसा ब्रह्मचर्य हमारा भी होना चाहिए!"

जब भी हम नीरू माँ से ब्रह्मचर्य की बातें करते थे तब उनके चेहरे पर एक अलग ही नूर रहता था। ब्रह्मचर्य के प्रोग्रेस से नीरू माँ सब से ज्यादा खुश होती थीं। उनका राजीपा (गुरुजनों की कृपा और प्रसन्नता) प्राप्त करना हो तो ब्रह्मचर्य में पुरुषार्थ करना चाहिए।

नीरू माँ के पास ऐसा मैग्नेटिक पावर था कि हम चाहे कहीं भी हों तो भी वह पावर हमें निरंतर खींचता रहता था। चित्त इधर-उधर भटकता ही नहीं था। सामने वाले व्यक्ति के चित्त का हरण करने की उनमें ग़ज़ब की शक्ति थी। पूज्य नीरू माँ के पास आने वाले सभी लोगों के हृदय में निरंतर नीरू माँ ही रहते। उनके चित्त में नीरू माँ के अलावा कोई आता ही नहीं, तो फिर दूसरे की ओर दृष्टि बिगाड़ने का तो सवाल ही खड़ा नहीं होता और ब्रह्मचर्य का पालन सहज ही हो जाता। विकारी भाव उठते ही नहीं थे। ऐसी उनकी सिद्धि और ऐसा उनका चरित्रबल...

नीरू माँ के प्रभाव के कारण ब्रह्मचर्य पालने वाले में एक भी गलत स्पंदन खड़ा नहीं होता।"

"ब्रह्मचारी बहनों का व्यवहार अन्य लोगों के साथ कैसा है, वह इसका भी बहुत ध्यान रखती थीं। उन्हें अगर लगे कि व्यवहार कुछ अलग प्रकार का दिख रहा है और गलतफहमी उत्पन्न हो रही है तो उस बारे में प्रेम से समझाती थीं।"

ब्रह्मचारी बहनों के कपड़ों के रंग का भी नीरू माँ ध्यान रखती थीं। और कहती थीं कि, "यह रंग शोभा नहीं देता।" सिर्फ कपड़े और रंग ही नहीं बल्कि बाल कैसे बनाने, किस प्रकार उठना-बैठना, किसी के घर गए हों तब कैसा व्यवहार करना, रसोई घर में काम कैसे करना चाहिए, ये सब गहराई से और प्रेमपूर्वक सिखाती थीं। इतनी गहराई से हमारा ध्यान रखने वाला कोई है, उसका हमें बहुत आनंद रहता था।

> **जब भी हम नीरू माँ से ब्रह्मचर्य की बातें करते थे तब उनके चेहरे पर एक अलग ही नूर रहता था। ब्रह्मचर्य के प्रोग्रेस से नीरू माँ सब से ज्यादा खुश होती थीं।**

ज्ञानी ही आत्मा का दर्पण

मुंबई सत्संग के दौरान एक ब्रह्मचारी भाई को मुझ से दुःख हो गया था। मैंने उनके प्रतिक्रमण भी शुरू कर दिए थे। फिर रात को जब नीरू माँ के साथ खाना खाने के बाद मैंने उन्हें सारी बातें बताई और कहा कि, “प्रतिक्रमण बहुत किए, लेकिन वे मुझ से बात नहीं कर रहे, थोड़ा दुःख हो गया है उन्हें”। उस समय दस-पंद्रह लोग बैठे थे तो नीरू माँ ने कुछ नहीं कहा, लेकिन दूसरे दिन जब हम उनके दर्शन करने गए तो वहाँ हमारे सहित दो-तीन व्यक्ति ही थे। तब नीरू माँ ने वह केस वापस लिया, नीरू माँ ने कहा, “तुझे पता चला कि, ऐसी वाणी क्यों निकली?” मैंने कहा “नहीं, नीरू माँ” और तो कुछ पता नहीं चला। तब फिर नीरू माँ ने कहा कि, “मैं कुछ जानता हूँ” का रोग शुरू हो गया है कि, “मैं ज्ञान में रहता हूँ तो तू भी ज्ञान में रह। मैं ही जानता हूँ, मैं ज्ञान में रहता हूँ, तू ज्ञान में नहीं रहता, ज्ञान में रह। भीतर ऐसा चलता हो न, तभी ऐसी वाणी निकलती है। यह अंधेरे की भूल कहलाती है।” इस तरह मुझे दस मिनट तक डाँटा।

श्रीमद् राजचंद्र जी ने कहा है कि, “जब तक खुद का आत्मा स्पष्ट रूप से अनुभव में नहीं आता, तब तक ज्ञानीपुरुष ही मेरा आत्मा है ऐसा निःशंक मानना।”

ज्ञानीपुरुष हमारा आईना कहलाते हैं। खुद की भूल जब खुद को पता नहीं चलती तो वह ज्ञानी ही दिखाते हैं। इसलिए ज्ञानी के पास अपनी जितनी भूलें खुली होगी न, फिर भले ही लोगों की हाज़िरी में बात करने की हिम्मत नहीं आए, तो साल में एक बार लिखकर रिपोर्ट तो दे सकते हैं न! लिखकर देने से बहुत मदद मिलती है। दादा तो कहते हैं न कि, “वाणी वह खुला अहंकार है, वाणी कैसी निकल रही है उस पर से अंदर कैसा अहंकार बरत रहा है, उसका पता चलता है।” लेकिन अंतःकरण पर जागृति बाद में आएगी लेकिन पूरे दिन में किसी भी व्यक्ति के साथ विचार, वाणी और वर्तन कैसे हुए वह रोज़ देखना शुरू होगा न, तो फिर धीरे-धीरे समझ में आएगा कि ऐसी वाणी निकली, उसके पीछे आशय क्या था, अंदर क्या चल रहा था, वह पता चलेगा।

नीरू माँ

जगत् कल्याण के नाविक

मैं पहले क्रमिक में बहुत रची-बसी थी। शास्त्र पढ़ने, उस दिशा में आगे बढ़ना, सत्संग सुनना, विधियाँ करना, वगैरह बहुत अच्छा लगता था। नीरू माँ "सेवा" को ज्यादा महत्व देती थीं। लेकिन मुझे सेवा, महात्माओं के साथ व्यवहार, वगैरह में रुचि नहीं थी। नीरू माँ व्यवहार कुशल थीं। वे गढ़ने का प्रयत्न करती थीं, लेकिन मुझे अच्छा नहीं लगता था। मुझे लगता था कि, मोक्ष के लिए यह सब ज़रूरी नहीं है। एक दिन मैं खाना खा रही थी, तब नीरू माँ आई और कहा, "तुझे पता है, कितने संयोग मिले होंगे तब जाकर यह खाना तुम तक पहुँचा है! जिस जगत् की ओर से आपको इतने अनुकूल संयोग मिल रहे हैं, उस जगत् का कल्याण तो करना ही चाहिए न?"

नीरू माँ की यह जगत् कल्याण की भावना अब तो हमारे अंदर बस गई है। जिस तरह नीरू माँ अपना तन-मन-धन, जगत् कल्याण के लिए फना कर चुके हैं वैसे ही हम भी हमारा सर्वस्व इसके लिए अर्पण कर देंगे।

नीरू माँ को सब को खाना खिलाने का भाव बहुत रहता था। सब को कैसा पसंद है, उसका ध्यान रखकर वे उस अनुसार बनाकर खिलाती थीं। लेकिन नीरू माँ यह भी कहती थीं कि, "जितने चावल के दाने खिलाए हैं, उतने लोगों का कल्याण आपके हाथों होना चाहिए"। मैं वीडियो टीम में था, इसलिए मुझे ऐसा लगता था कि हम वास्तव में उतना कल्याण कर रहे हैं, भले ही एक व्यक्ति ही देखता हो, लेकिन ऐसा लगता था कि एक चावल का दाना तो हुआ।

प्रेम से रहना... प्रॉमिस?

हॉस्पिटल में जब नीरू माँ के अंतिम दिन चल रहे थे तब वे I.C.U. में और मैं I.C.U. के बाहर खड़ा था। मुझे ऐसा लगा कि नीरू माँ मुझे बुला रही हैं। मैंने अंदर जाकर पूछा, "नीरू माँ कुछ काम है?" नीरू माँ कुछ कहने का प्रयत्न कर रही थीं लेकिन मेरी समझ में नहीं आ रहा था। मैंने उन्हें कागज़ और पेन दिया। नीरू माँ ने लिखा "प्रेम से रहना"। मैंने पूछा, "इसका मतलब? किसके साथ प्रेम से रहना है? आप्तपुत्रों के साथ? महात्माओं के साथ?" नीरू माँ ने इशारा किया और मेरी समझ में आ गया कि, हम सभी को एक-दूसरे के साथ प्रेम से रहना है। मैंने कहा, "पक्का" तो नीरू माँ ने लिखा कि, "प्रॉमिस?" मैंने कहा, "हाँ, प्रॉमिस... पक्का। हम प्रेम से ही रहेंगे।"

-डिम्पल भाई

પ્રેમથી રેજો...
પ્રોમીસ?

संकुल की माँ “नीरू माँ”

१९९६ में एक बार नीरू माँ के साथ मैं बड़ौदा गई थी। एक हफ्ते के लिए उनके साथ रहकर मैं फिर घर आ गई थी। वहाँ मुझे बुखार हो गया था। तब डॉ. अनुप भाई वहाँ पर उपस्थित थे, उन्होंने मुझे दवाई दी और दो-तीन दिनों तक मुझे कुछ खाने से मना किया था। सिर्फ खिचड़ी ही खा सकती थी। डाइनिंग टेबल पर कैसरोल में मेथी के पराठें रखे थे। मैं कैसरोल का ढक्कन उठाकर देख रही थी और नीरू माँ ने दरवाज़ा खोला और कहा कि, “क्या कर रही हो?” मैंने कहा, “कुछ नहीं, नीरू माँ, देख रही हूँ”। “खाना मत, दो दिन तक तुझे कुछ भी नहीं खाना है। तुझे पसंद नहीं हो तो मैं तेरे लिए खिचड़ी बना दूँगी, लेकिन तू यह मत खाना। तुम ठीक हो जाओ, इसलिए मैं तुम्हारे लिए खिचड़ी बना दूँगी।”

भाई, बहन को कैसे भूल सकता है?

नीरू माँ अमरीका से जब वापस आतीं तब सभी ब्रह्मचारी भाइओं-बहनों के लिए चॉकलेट या केडबरी ऐसा कुछ लेकर आतीं। हम दादा-दर्शन में रहते थे तब सेकन्ड फ्लोर पर ब्रह्मचारी बहनें, थर्ड फ्लोर पर नीरू माँ और फॉर्थ फ्लोर पर ब्रह्मचारी भाई रहते थे। सेकन्ड फ्लोर वाला फ्रीज़ सब्ज़ी और फ्रूट्स से भरा रहता था, इसलिए फॉर्थ फ्लोर वाले फ्रीज़ में केडबरी और ऐसा सबकुछ रखा था। काफी दिनों से ये सब पड़ा था, इसलिए हमें ऐसा लगा कि, हमारे लिए ही तो लाए हैं न! तो मुझे और दूसरे ब्रह्मचारी भाइओं को लगा कि, चलो खा लेते हैं। हमने सब चीज़ें खा ली। फिर नीरू माँ को पता चला। हम दोनों को बुलाया, सिर्फ इतना ही कहा कि, “आपको ब्रह्मचारी बहनें याद नहीं आई?” भले सिर्फ मैंने अकेले ने नहीं खाई थी लेकिन नीरू माँ के वे शब्द याद आते हैं कि, “ब्रह्मचारी बहनें याद नहीं आई?” उस एक ही वाक्य से जो बनिया प्रकृति थी कि “खुद के अलावा अन्य किसी के बारे में नहीं सोचते”, वह टूट गई। उसके बाद कोई भी चीज़ आए तो हमेशा पहले ऐसे ही लगता है कि, पहले बहनों के लिए भेज दें। उस अनुभव से ऐसा रियलाइज़ हुआ कि हमेशा दूसरों के लिए सोचना चाहिए। सेवा में या अन्य किसी जगह जाएँ तब यह अनुभव बहुत हेल्प करता है। नीरू माँ का ऐसा सब देखा था कि छोटी-छोटी बातों में भी सभी की टेक केयर करती थीं।

फुलड़ा झंखे छे जननी, एक ज लगने

नीरू माँ की व्यवहार सूझ

पहले हम अहमदाबाद में वरुण बिल्डिंग में नीरू माँ के साथ रहते थे। भाइओं अलग फ्लोर पर रहते थे और बहनें अलग फ्लोर पर रहती थीं। बहनों को किसी चीज़ की ज़रूरत पड़े तो भाइओं को फोन करना पड़ता था। एक दिन ऐसा हुआ कि, भाइओं को पाँच-छः फोन करने पड़े, तब नीरू माँ ने टोका कि, "पहले ज़रूरी चीज़ों का लिस्ट बनाकर दिन में दो बार ही फोन करने हैं"।
नीरू माँ के टोकने से हमारे ब्रह्मचर्य की भी हिफाजत हुई और भाइओं को भी कम डिस्टर्बन्स होता था।

मैं जॉइन्ट फैमिली में से आई हूँ और घर में सब से छोटी होने की वजह से कभी कोई काम ही नहीं किया था। पढ़ाई में होशियार थी तो किसी ने कुछ भी नहीं कहा था। जब मैं नीरू माँ की सेवा में आई तब मुझे कुछ भी नहीं आता था। जितना नीरू माँ कहतीं, उतना मैं कर देती। उसके आगे-पीछे कुछ नहीं सूझता था। एक बार नीरू माँ ने मुझे बुलाकर कहा कि, "देख... मैं तुझ से कहूँ कि मुझे टूथ ब्रश दे, तो तुझे टूथ ब्रश धोकर साथ में टूथ पेस्ट और टंग-क्लीनर भी लाना है। जो भी कहूँ, अपनेआप ही उसके आगे-पीछे का विचार करके ले आना है।"
उसके बाद धीरे-धीरे मेरी सूझ खिलने लगी। कोई एक चीज़ कहे तो मैं सोचने लगती और उसके आगे-पीछे की सूझ पड़ने लगी।

पारायण से पहले नीरू माँ ने एक बार कहा था कि, "हमें सामने वाले की प्रकृति का पता रहता है, लेकिन उसकी नोंध नहीं रहती। जहाँ नोंध है वहाँ राग-द्वेष रहेंगे ही। अगर पता हो तो उस प्रकृति के साथ डीलिंग करने में आसान रहता है।"

हम वरुण में रहते थे, तब एक बार टेम्पो ट्रावेल्स में बाहर जाना था। एक महात्मा बहन को उसमें बैठा हुआ देखकर मैंने पूछा, "आप पूछकर बैठी हैं?" यह सुनकर उन्हें बुरा लग गया और वे नीचे उतर गई। नीरू माँ को जब इस बात का पता चला तब उन्होंने मुझे बुलाकर कहा कि, "अभी के अभी उस बहन के घर जाकर माफी माँग कि, "मुझ से गलती हो गई"। नीरू माँ ने इतने कठोर शब्दों में कहा कि, मैंने रात को ही जाकर उनकी माफी माँगी।

किसी भी महात्मा को ज़रा सा भी दुःख हो जाए तो नीरू माँ का हृदय कांप उठता था। वास्तव में नीरू माँ पूरे जगत् की माँ थीं।

चलेगा, भाएगा और रास आएगा

नीरू माँ के तो कई उपकार हैं, लेकिन उसमें से एक-दो बातें कहूँगी। नीरू माँ कहती थीं कि, “१० भाई एक साथ रह सकते हैं, लेकिन ३ बहनें नहीं रह सकती”। और दूसरा, खाने में! “बहनें खाने में एडजस्टमेन्ट नहीं ले सकती, बहनों की खाने की वृत्तियाँ बहुत ज्यादा होती हैं, जो संतुष्ट नहीं हो पाती”। इन दो बातों के लिए नीरू माँ ने हमारे लिए जो किया है उस वजह से अब हम बहुत संभल गए हैं, ऐसा लगता है।

२००४ में लगभग २६ कुमारी बहनें एक साथ सीमंधर सिटी रहती थीं, नीरू माँ ने हमारे लिए ऐसी व्यवस्था की थी कि, सीमंधर सिटी में हमें अपने घर पर मम्मी-पापा के साथ रहना और अगर मम्मी-पापा सीमंधर सिटी नहीं रहते हों, तो अकेले रहना। और सभी बहनें खाना उणोदरी में खाती थीं। शुरुआत में उणोदरी में बहुत परेशानी होती थी कि, जो बना हो वही खा सकते थे, अपने आप अंदर से कुछ भी नहीं ले सकते थे। बाहर टेबल पर जो रखा हो उसी में एडजस्टमेन्ट लेना होता था। कभी-कभार भूखे रहते थे, कभी-कभार पसंद नहीं आता था। मुझे गुड़ खाने की बहुत आदत थी, खाने के साथ गुड़ तो चाहिए ही। फिर तो धीरे-धीरे सबकुछ खाना सीख गए, एडजस्टमेन्ट लेना सीखे और साथ ही एक-दूसरे का ध्यान रखना भी सीख गए। ध्यान यानी क्या? कि हम सभी को पता रहता है कि किसे क्या पसंद है, अगर कोई खाना खाने नहीं आया हो तो हम उसे फोन करते कि “चल खाना खाने आ जा, आज तेरी पसंद का है”। खाने में बहुत एडजस्टमेन्ट लेना सीख गए कि, यह पसंद नहीं हो तो दूसरा कुछ खा लेते, दूसरा नहीं तो तीसरा खा लेते।

अंदर ऐसा रहता था कि नीरू माँ जो कुछ भी कर रही हैं वह बहुत बड़ा उपकार है, वर्ना हमारी खाने की वृत्तियाँ छूटेंगी ही नहीं। अगर उणोदरी नहीं कर पाएँगे तो जागृति नहीं रहेगी। एडजस्टमेन्ट तो हुआ ही, साथ में जागृति भी बढ़ गई। खाने की वृत्तियाँ छूट गई तो किसी भी प्रकार का एडजस्टमेन्ट लेने में देर नहीं लगेगी।

नीरू माँ ने हमें घर पर मम्मी-पापा के साथ रहने के लिए कहा था। सेवा में तो हम छब्बीस बहनें साथ में ही रहती थी, इसलिए कहीं न कहीं आपस में मिल ही जाते थे। इस वजह से धीरे-धीरे हम एक-दूसरे की प्रकृति पहचानने लगे कि किसे क्या रास आएगा, यह चीज़ वह ठीक से करेगी, किसकी वृत्ति क्या काम कर रही है, किसका अहंकार कैसा है, उसके साथ कैसे बात करें, किस तरह संभालना चाहिए, किस तरह हेल्प कर सकते हैं। इस कारण से ऐसा हुआ कि जब दस साल बाद दीपक भाई ने हमें एक साथ रहने के लिए कहा तो हम

सभी बहनें एक-दूसरे को पहचानती थीं। इसलिए आपस में एडजस्टमेन्ट लेने में देर नहीं लगी। पहले से ही पहचानते थे इसलिए बहुत बड़ा फायदा हुआ।

शुरुआत में अगर घर में रहने के लिए नहीं कहा होता तो बहुत कषाय हो जाते, क्योंकि नया-नया ज्ञान लिया था, नए-नए ही रहने आए थे, और ज्ञान में भी इतने गहरे नहीं उतरे थे। तो शुरुआत में कषाय हो जाते और एक-दूसरे के प्रति अभिप्राय बाँध लेते। और अभिप्रायों को धोने में बहुत देर लगती, एक-दूसरे के साथ एडजस्टमेन्ट लेने में देर लगती।

इन दो बातों में नीरू माँ ने हमें जिस प्रकार रखा, वह बहुत बड़ा उपकार किया है, ऐसा लगता है। अब हम सेट हो गए हैं, ऐसा लगता है।

ज्ञानी विद यूथ

प्रश्नकर्ता : नीरू माँ के समय संकुल का जो सिंचन होता था और अभी सिंचन की जो प्रोसेस है, तो दोनों में क्या फर्क है?

पूज्य श्री : कुछ भी नहीं। पूरा संचालन नीरू माँ का ही है। कुछ फर्क नहीं है, हमारी बुद्धि के दखल हैं, उतना फर्क है।

प्रश्नकर्ता : जब नीरू माँ थीं तब वे डायरेक्ट बुला लेती थीं, कहती थीं कि "आ जाओ"।

पूज्य श्री : पहले भी नीरू माँ ही थीं और अभी भी नीरू माँ ही हैं। हमारा चलन ही नहीं है।

प्रश्नकर्ता : मेन्टालिटी से कुछ फर्क पड़ता है?

पूज्य श्री : कोई फर्क नहीं पड़ता। नीरू माँ की कृपा से, नीरू माँ के आशीर्वाद से और नीरू माँ के संचालन से चल रहा है। हम तो सौ प्रतिशत मानते हैं और जो कहता है न कि, "मैं मनमानी कर सकता हूँ"। वह मार खाएगा और "दीपक भाई अपनी मनमानी करते हैं", ऐसा जो मानता होगा, वह भी मार खाएगा। समझ में आया?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

पूज्य श्री : यह कम्पैरिसन करने जैसा नहीं है। दादा के समय का, नीरू माँ के समय का, दीपक भाई के समय का, किसी का भी कम्पैरिसन करने जैसा नहीं है। बहुत से संचालन व्यवस्थित शक्ति से चलते हैं। कोई कर्ता नहीं है, इसका कोई मालिक ही नहीं है। हम सब तो ट्रस्टी हैं। ट्रस्टी यानी क्या? एक-दूसरे को हेल्प करते हैं, संभालते हैं और फर्ज़ निभाते हैं। हम गार्डिज़न हैं। यहाँ कोई मालिक है ही नहीं। इसलिए यह संचालन व्यवस्थित शक्ति का ही है और उससे भी आगे कहना चाहें तो देव-देवियाँ, दादा-नीरू माँ और सीमंधर स्वामी का आशीर्वाद है। यह जगत् कल्याण का मिशन सीमंधर स्वामी का है और देव-देवियों का संचालन है। मनुष्य की शक्ति ही नहीं है कि, इतने बड़े संचालन को संभालकर कंट्रोल कर सके। दैविय कृपा से सब चल रहा है। आपको कोई उलझन नहीं है न?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

चलो खेलें...

नीचे दिए गए अपूर्ण वाक्य इस अंक से लिए गए हैं। उन्हें इस टेबल में से ढूँढिए।

का	ना	गे	नि	न्ट	के	भू	क	ह	ने	री	ड
माँ	म	बे	ए	ने	बे	णी	ण	क	न्ट	ण	ने
भू	के	ने	ना	ड	र्य	नि	र	हें	गे	र्य	नि
ल	णी	नि	गे	भू	ज	बे	ने	द	ने	बे	ड
वा	स	रं	क	ल्या	ण	स्ट	री	टो	नि	टी	नि
इ	लि	ज	द	नि	म	ने	मे	मा	रं	गे	ज
ए	त	ना	री	गे	बे	द	मा	न्ट	ज	बे	ल्या
ब	ने	प्र	न्ट	र्स	गे	क	र	ने	नि	बे	रं
ना	या	स	न	द	गे	मा	नि	र्स	टो	क	ने
र	ध्रु	ते	टो	ज	ने	सं	चा	ल	न	बे	द
ज	व	ब	ज	से	काँ	प्र	ज	ब्र	प्र	र्स	चा
मा	काँ	ह	मा	वा	टा	ज	ह्म	ए	बे	ल	टी
री	टा	द	ड	री	मा	च	प्र	ए	चा	टा	ने
ड	द	री	मा	टो	र्य	ह	स्ट	स	हें	ब्र	न्ट
ने	री	ह्व	ज	ड	ह	ह	गे	ह्म	ते	ना	ज
मा	र्य	द	र्य	मा	नों	ह	क	ब्र	ध	टो	ब
ड	मा	य	ह	द	ड	ध	रं	फी	नों	ह	ह
ज	टो	रं	मा	फी	ज	भा	ल	ह	रं	गे	नें

१. नीरू माँ का नाम --------।

२. इस नीरू के लिए हम इसलिए इतने प्रयास करते हैं कि जब हमारी अनुपस्थिति हो तब भी वह किसी का -------- बदल सके ऐसी शक्ति है उनमें!

३. नीरू बहन, आपने ---- की तरह हमारी नर्सरी की है, ---- की तरह चाकरी की है और --- की तरह सेवा की है।

४. ---- का पालन लोहे के चने चबाने जैसा है।

५. पूज्य नीरू माँ के पास आने वाले सभी लोगों के ---- में निरंतर नीरू माँ ही रहते।

६. यह अंधेरे की ---- कहलाती है।

७. ---- कैसी निकल रही है उस पर से अंदर कैसा अहंकार बरत रहा है, उसका पता चलता है।

८. नीरू माँ ---- को ज्यादा महत्व देती थीं।

९. "जितने चावल के दाने खिलाए हैं, उतने लोगों का ---- आपके हाथों होना चाहिए"।

१०. नीरू माँ कुछ ---- का प्रयत्न कर रही थीं लेकिन मेरी समझ में नहीं आ रहा था।

११. हम प्रेम से ही ---- ।

१२. तुझे पसंद नहीं हो तो मैं तेरे लिए खिचड़ी ---- दूँगी।

१३. आपको ब्रह्मचारी ---- याद नहीं आई?

१४. नीरू माँ के ---- से हमारे ब्रह्मचर्य की भी हिफाजत हुई।

१५. हमें सामने वाले की प्रकृति का पता रहता है, लेकिन उसकी --- नहीं रहती।

१६. मैंने रात को ही जाकर उनकी ---- माँगी।

१७. ---- तो हुआ ही, साथ में जागृति भी बढ़ गई।

१८. मनुष्य की शक्ति ही नहीं है कि, इतने बड़े ---- को संभालकर कंट्रोल कर सके।

जवाब के लिए : goo.gl/e9voLj

2017

युva Junior

युवाओं की आध्यात्मिक प्रगति के लिए निष्पक्षपाती मंदिर पर होती है शिविर

पद भक्ति, प्रक्षाल, गलबा, गेम्स और कई प्रवृत्ति,
पिकनिक, आप्तसंकुल के भाइयों के साथ सत्संग

१३-१६ वर्ष के युवा भाइओं के लिए

५ से ९ मई, गोधरा त्रिमंदिर...

तो आज ही रेजिस्ट्रेशन कीजिए

आपके बच्चे को AKonnect App. द्वारा...

ज्यादा जानकारी के लिए संपर्क कीजिए - ०७९ ३९८३०९३९

मार्च २०१७
वर्ष : ४, अंक : ११
अखंड क्रमांक : ४७

अक्रम यूथ

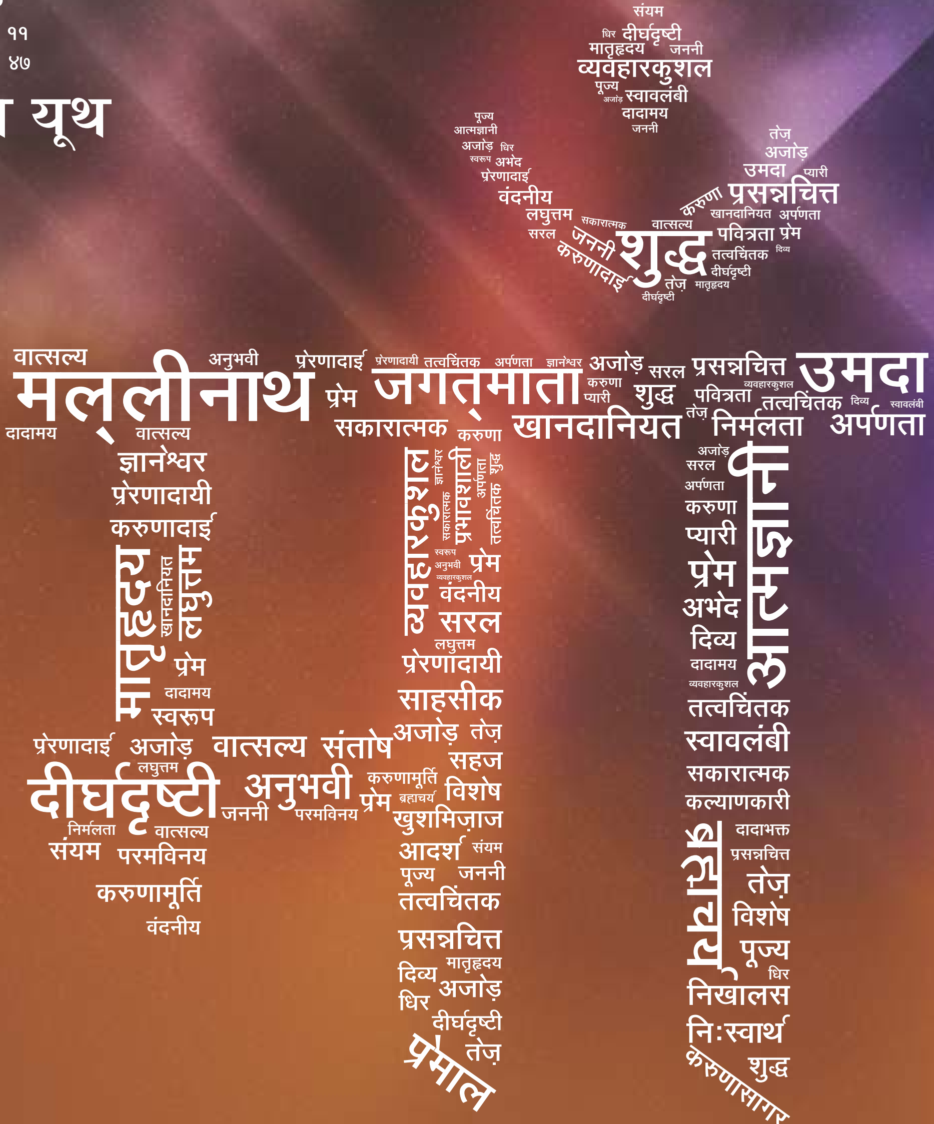
संयम
धिर दीर्घदृष्टी
मातृहृदय जननी
व्यवहारकुशल
पूज्य स्वावलंबी
अजोड़
दादामय
जननी
पूज्य
आत्मज्ञानी
अजोड़ धिर
स्वरूप अभेद
प्रेरणादाई
वंदनीय
लघुत्तम
सकारात्मक
सरल
जननी
करुणादाई
शुद्ध
वात्सल्य
करुणा
तेज़
अजोड़
उमदा
प्यारी
प्रसन्नचित्त
खानदानियत
अर्पणता
पवित्रता प्रेम
तत्वचिंतक
दिव्य
दीर्घदृष्टी
तेज़
मातृहृदय
दीर्घदृष्टी
वात्सल्य
अनुभवी
प्रेरणादाई
प्रेरणादायी
तत्वचिंतक
अर्पणता
ज्ञानेश्वर
अजोड़
सरल
प्रसन्नचित्त
मल्लीनाथ
प्रेम
जगत्माता
करुणा
प्यारी
शुद्ध
पवित्रता
व्यवहारकुशल
तत्वचिंतक
दिव्य
स्वावलंबी
उमदा
दादामय
वात्सल्य
सकारात्मक
करुणा
खानदानियत
तेज़
निर्मलता
अर्पणता
ज्ञानेश्वर
प्रेरणादायी
करुणादाई
मातृहृदय
लघुत्तम
प्रेम
दादामय
स्वरूप
प्रेरणादाई
अजोड़
वात्सल्य
संतोष
लघुत्तम
दीर्घदृष्टी
अनुभवी
जननी
परमविनय
प्रेम
निर्मलता
वात्सल्य
संयम
परमविनय
करुणामूर्ति
वंदनीय
व्यवहारकुशल
सकारात्मक
ज्ञानेश्वर
प्रभावशाली
अर्पणता
तत्वचिंतक
शुद्ध
स्वरूप
अनुभवी
व्यवहारकुशल
प्रेम
वंदनीय
सरल
लघुत्तम
प्रेरणादायी
साहसीक
अजोड़
तेज़
सहज
करुणामूर्ति
ब्रह्मचर्य
विशेष
खुशमिज़ाज
आदर्श
संयम
पूज्य
जननी
तत्वचिंतक
प्रसन्नचित्त
मातृहृदय
दिव्य
अजोड़
धिर
दीर्घदृष्टी
तेज़
प्रेमाल
अजोड़
सरल
अर्पणता
करुणा
प्यारी
प्रेम
अभेद
दिव्य
आत्मज्ञानी
दादामय
व्यवहारकुशल
तत्वचिंतक
स्वावलंबी
सकारात्मक
कल्याणकारी
ब्रह्मचारी
दादाभक्त
प्रसन्नचित्त
तेज़
विशेष
पूज्य
धिर
निखालस
नि:स्वार्थ
करुणासागर
शुद्ध

अपने प्रतिभाव और सुझाव akramyouth@dadabhagwan.org पर भेजें।

मालिक - महाविदेह फाउन्डेशन की तरफ से प्रकाशितमुद्रक और संपादक - श्री डिम्पल मेहता
अंबा ऑफसेट - पार्श्वनाथ चेम्बर्स, उस्मानपुरा, अहमदाबाद विभाग १४ से प्रकाशित की गई है।

Dada's Youth Network